Toppersnotes®
Unleash the topper in you

1st – ग्रेड

स्कूल व्याख्याता

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग - 2

राजनीति विज्ञान

स्नातक स्तर

SIERRA INNOVATIONS

INDEX

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	स्नातक स्तर	
1.	उत्तर-व्यवहारवाद (Post Behaviouralism)	1
2.	राज्य (State)	5
3.	लोकतंत्र	24
4.	संघवाद	38
5.	विश्व की व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका	60
6.	भारत में संघात्मक शासन (केंद्र-राज्य संबंध)	102
7.	प्लेटो (Plato)	122
8.	अरस्तू (Aristotle)	131
9.	मैकियावली	142
10.	हॉब्स	148
11.	जॉन लॉक	153
12.	जीन जैक्स रूसो (1712-1778)	160
13.	जॉन स्टुअर्ट मिल, JS MILL (1806 – 1873)	168
14.	कार्ल मार्क्स	177
15.	कौटिल्य / चाणक्य / विष्णुगुप्त	197
16.	अरविंद घोष [1872-1950]	207
17.	पण्डित जवाहर लाल नेहरू [1889 - 1964]	213
18.	राम मनोहर लोहिया (1910-1968)	218
19.	भारत की विदेश नीति	220
20.	भारत नेपाल संबंध	237

1 CHAPTER

उत्तर-व्यवहारवाद (Post Behaviouralism)

डेविड ईस्टन ने 1969 में अमेरिकन पॉलिटिकल साइंस एसोसिएशन के अध्यक्षीय भाषण में अपनी गलतियों को स्वीकार करते हुए उनमें सुधार करने की घोषणा की। इसलिए उत्तर-व्यवहारवाद, व्यवहारवाद का एक सुधरा हुआ रूप है न कि उसका विरोधी।

डेविड ईस्टन के व्यवहारवाद ने न तो सामाजिक समस्याओं का हल किया, न कोई बुद्धिजीवियों को स्थान दिया, और शोध पर इतना धन खर्च कर दिया कि ये विरोध होने लगा कि व्यवहारवाद एक अनुपयोगी विचारधारा है और ये आभास स्वयं व्यवहारवादियों को भी होने लगा है।

उत्तर-व्यवहारवाद की उत्पत्ति के मुख्य कारण:-

1. व्यवहारवाद से सामाजिक समस्याओं का हल नहीं हुआ।
2. **तत्कालिक अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ:-** क्यूबा संकट 1962, वियतनाम संकट (हिन्द-चीन समस्या), 70 व 80 का दशक, चीन द्वारा परमाणु परीक्षण, साम्यवाद का बढ़ता हुआ प्रसार।
3. व्यवहारवाद के कारण तथ्यात्मक जटिलताएं बढ़ गईं।
4. मानव मशीन बनकर रह गया था, उसको पुनः मानव बनाना।

थॉमस ए. कुहान -

इन्होंने 1962 में ये सिद्धांत दिया कि विज्ञान में कुछ चीजें निश्चित होती हैं, इसलिए व्यवहारवादियों को उसके पीछे नहीं दौड़ना चाहिए।

- अमेरिकी युवाओं में सांस्कृतिक रूप से पतन प्रारम्भ हो गया था जिसको अमेरिका की **प्रतिसंस्कृति** कहा गया। (**संस्कृति के विरुद्ध संस्कृति**)
- उत्तर-व्यवहारवाद परम्परावाद नहीं है लेकिन दोनों में समानताएँ हैं क्योंकि दोनों **मूल्यों** को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं।
- उत्तर-व्यवहारवाद न तो कोई सुनिश्चित सिद्धान्त है न ही किसी विशेष पद्धति का समर्थन करता है ये व्यवहारवाद का सुधरा हुआ रूप है जो राजनीति विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान बनाने की प्रक्रिया के प्रति असंतोष है।
- उत्तर-व्यवहारवाद क्रियाओं को करके सुधारने का प्रयास है। इसलिए इसमें अनुभववाद भी दिखाई देता है।
- उत्तर-व्यवहारवाद समाज विज्ञानों में मूल्यों का प्रयोग करके भावी समस्याओं का समाधान करना चाहती थी।
- उत्तर-व्यवहारवाद परम्परागत दृष्टिकोण का पुनरुत्थान भी नहीं माना जा सकता है क्योंकि परम्परागत दृष्टिकोण में विज्ञान का कोई स्थान नहीं है।

माइकल हेस – इन्होंने द्वन्द्वात्मक सिद्धान्त के आधार पर उत्तर-व्यवहारवाद को परिभाषित किया है।

- 1945 से पूर्व परम्परावाद को **वाद** कहा।
- 1945 के बाद व्यवहारवाद को **प्रतिवाद** कहा।
- 1969 के बाद से वर्तमान संवाद उत्तर-व्यवहारवाद को **संवाद** कहा।

उत्तर-व्यवहारवाद की विशेषताएँ :—

1. **कर्म और प्रासंगिकता पर बल** — ये उत्तर-व्यवहारवाद का नारा भी था। प्रत्येक कार्य की प्रासंगिकता होना आवश्यक है।
   - ✓ प्रासंगिकता का मूलमंत्र है — प्रासंगिकता, मूल तत्व, कर्म।
   - ✓ प्रासंगिकता और कर्म में तीन तत्व शामिल होते हैं —

     1. प्रासंगिकता 2. मूल तत्व 3. कर्म / कर्त्तव्य

2. **तकनीक से पूर्व सार तत्व (सारखित्य) पर बल** → इसका अर्थ है— कोई भी तकनीक प्रयोग में लाने से पहले सार्थकता पर बल देना चाहिए। **व्यवहारवाद** के अनुसार गलत होना उतना बुरा नहीं, जितना बुरा अस्पष्ट होना है। **उत्तर-व्यवहारवाद** के अनुसार — अस्पष्ट होने की तुलना में अप्रासंगिक होना अधिक बुरा है।
   - ✓ व्यवहारवाद यथास्थितिवाद पर बल देता है जबकि उत्तर-व्यवहारवाद परिवर्तनवाद पर बल देता है।

उत्तर-व्यवहारवाद के अन्य बिंदु:

- मूल्यों को पुनः राजनीतिक अध्ययन विज्ञान में शामिल करना।
- मूल्य सापेक्षता व तथ्य सापेक्षता पर बल।
- कर्मनिष्ठता पर बल।
- बुद्धिजीवियों को राजनीतिक विज्ञान में स्थान।
- व्यवसाय के राजनीतिकरण पर बल। ↳ इससे तात्पर्य है— कि प्रत्येक व्यवसाय के बारे में राजनीतिक समझ होनी चाहिए ताकि नागरिक समाज का निर्माण किया जा सके।
- **व्यवसाय के राजनीतिकरण का अर्थ है**— राजनीतिक समझ रखना अर्थात् सभी व्यवसायों की व्यवस्थाओं का राजनीतिकरण होना।
- उत्तर-व्यवहारवाद को परिभाषित करते हुए **ईस्टन** ने राजनीति विज्ञान को **मूल्यों का आधिकारिक आवंटन** कहा था।

परम्परावाद	व्यवहारवाद	उत्तर-व्यवहारवाद
मूल्य व तथ्यों के सम्बन्ध (मूल्यों की प्रधानता)	मूल्य निरपेक्ष व तथ्य सापेक्ष	मूल्य और तथ्य सापेक्ष
आदर्शवाद	अतियथार्थवाद	आदर्श व यथार्थवाद
विज्ञान पर कोई बल नहीं दिया	अतिवैज्ञानिकता पर बल	विज्ञान समस्याओं पर बल
संस्थावाद	व्यवहारवाद	संस्था व व्यवहारवाद
गुणात्मक (यूरोप)	परिमाणात्मक (USA + UK)	गुणात्मक व परिमाणात्मक (तृतीय विश्व / तीसरी दुनिया)

- वर्तमान समय में उत्तर-व्यवहारवाद का सिद्धान्त ही प्रसिद्ध है क्योंकि ये शुद्ध ज्ञान की बजाय **अनुप्रयुक्त ज्ञान** पर बल देता है।
- उत्तर-व्यवहारवाद सामाजिक समस्याओं का हल कर पा रहा है इसलिए **1997** में **ईस्टन** ने अपने एक लेख में उत्तर-व्यवहारवाद के भविष्य की व्याख्या करते हुए ये उल्लेख किया कि ये सामाजिक समस्याओं को हल करने में सफल रहा है और उत्तर आधुनिकता का रूप ले चुका है जिससे विज्ञान का अन्त, इतिहास का अन्त और वस्तुनिष्ठता का अन्त है।

राजनीतिक सिद्धान्तों का पतन :—

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका महाशक्ति बना तो वह अकादमिक रूप से भी अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता था और उसी वर्चस्ववाद के तहत इन्होंने राजनीतिक सिद्धान्तों के पतन का एक विचार पैदा किया, जो 1950 से लेकर 1970 के बीच चला।

- **राजनीतिक सिद्धान्तों का पतन का अर्थ ये था -** निगमनवाद, मानसत्ता, अतिवाद, नैतिकता, मूल्यों का राजनीतिक सिद्धान्तों में कोई स्थान नहीं।
- **1951** में **ईस्टन** ने अपने लेख **"Decline of Modern Political Theory"** में कहा कि राजनीतिक सिद्धान्तों का पतन हो गया है।
- **1953** में **ईस्टन** ने अपनी पुस्तक **"Political System"** में राजनीति विज्ञान को व्यवस्था कहा।
- **1953** में **अल्फ्रेड कोबा** ने भी अपने लेख **"Decline of Political Theory"** में राजनीतिक सिद्धान्तों के पतन का उल्लेख किया।

- **ईस्टन** के राजनीतिक सिद्धान्त के पतन से पहले व्यवहारवाद, प्रत्यक्षवाद (**अगस्त काम्टे**), तार्किक प्रत्यक्षवाद (**ईस्टन, वियना सर्कल**), भाषायी दर्शन (**लुडविग विट्गेन्स्टाइन**) ने राजनीतिक सिद्धान्तों में मूल्यों को कमजोर करने का प्रयास किया इसलिए इन सभी विचारों ने राजनीतिक सिद्धान्तों के पतन की अवधारणा का समर्थन किया।

  स्वः कार्य-पॉपर का मिथ्यापनीयता का सिद्धान्त— कोई सिद्धान्त तब तक सत्य व अंतिम नहीं है जब तक उसकी आलोचना व खण्डन नहीं किया जा सकता। वैज्ञानिकता का निर्धारण इसी बात से किया जाना चाहिए कि किसी विचार में कितना मिथ्यापन है।
- **राबर्ट डहल** — आंग्ल राष्ट्रों में राजनीतिक सिद्धान्त मर चुका है, साम्यवादी देशों में ये कैद हैं और विकसित देशों में ये पतन की ओर जा रहा है।

ईस्टन ने राजनीतिक सिद्धान्त के निम्न पतन के निम्नलिखित कारण बताये —

1. **इतिहासवाद** — इतिहासवाद से तात्पर्य है — पुरानी ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर वर्तमान का निर्णय लेना। शताब्दियों पुराने विचारों को आधार मानकर वर्तमान के निर्णय लेना असंगत होगा। ईस्टन के अनुसार J.S मिल और मार्क्स के बाद कोई महान विचारक पैदा नहीं हुआ हम पुराने विचारों के ही चिपके रहे जो कि राजनीतिक सिद्धान्त को पतन की ओर ले गये।
2. **नैतिक सापेक्षवाद** — नैतिकता के साथ राजनीतिक सिद्धान्तों का चिपके रहना पतन का कारण बना। क्योंकि नैतिक सापेक्षवाद व्यक्ति की वैज्ञानिकता को कम कर देता है। ईस्टन ने डेविड ह्यूम और मैक्स वेबर को नैतिक सापेक्षवाद का उत्तरदायी ठहराया है।
   - ✓ डेविड ह्यूम प्रथम उपयोगितावादी विद्वान था। जबकि मैक्स वेबर जर्मनी का समाजशास्त्री था।
   - ✓ ईस्टन प्रारम्भ में (व्यवहारवाद में) मूल्यों को पूर्णतया हटाना चाहता है जबकि 70 के दशक के बाद (उत्तरव्यवहारवाद) वे मूल्यों को स्वीकार करते हैं और कहते हैं - "मूल्यों को कोट की तरह उतार कर नहीं फेंका जा सकता।"
   - ✓ ईस्टन— नीति शून्य विज्ञान व्यक्ति को सामाजिक यथार्थ से पृथक करता है।
3. **अति तथ्यवाद :-** अति तथ्यवाद ने राजनीतिक सिद्धान्तों के पतन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है क्योंकि तथ्यों की अधिकता तथ्यों की निरुपयोगशीलता को बढ़ावा देती है।
   - ✓ ईस्टन ने 'सैद्धान्तिक कुपोषण' शब्द का प्रयोग किया है। जिसका अर्थ है वास्तविक सिद्धान्तों का अभाव और सिद्धान्त के नाम पर अनेक तथ्यों का सामने आना।

राजनीतिक सिद्धान्तों के प्रति अविश्वास, संशय और भ्रम

अल्फ्रेड कोबा — इस्टन की तरह राजनीतिक सिद्धान्त के पतन का सिद्धान्त कोबा ने भी दिया। उनके अनुसार राजनीतिक सिद्धान्तों के पतन के दो मुख्य कारण होते हैं:— (1) आन्तरिक कारण (2) बाहरी कारण।

आन्तरिक — आन्तरिक तत्वों में नौकरशाही और दलीय व्यवस्था को उत्तरदायी मानते हैं।

└──> लोकतांत्रिक देशों में नौकरशाही और साम्यवादी देशों में दलीय व्यवस्था राजनीतिक सिद्धान्तों के पतन का कारण।

- लोकतंत्र का सैद्धान्तिक संकट का कारण राजनीतिक दल और नौकरशाही को **अल्फ्रेड कोबा** मानते हैं।
- विचारधारा को सिद्धान्त के पतन का कारण **दांते जर्मिनो** मानते हैं।
- **अल्फ्रेड कोबा** — द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में तटस्थता, असंलग्नता, निरपेक्षता जैसी अवधारणाएँ आयी जिसके कारण व्यावहारिक समस्याओं से राजनीतिक सिद्धान्त अलग हो गये। जिसके कारण राजनीतिक सिद्धान्तों का पतन हुआ।
- **S.M. लिपसेट** — अमेरिकी लोकतंत्र विश्व सर्वोत्तम शासन का तरीका है जिसमें अच्छे समाज के सभी मूल्य पाये जाते हैं इसलिए अब नये सिद्धान्तों की आवश्यकता नहीं है।
- **पुस्तक — Political men 1967**
- **दांते जर्मिनो** — ये फ्रांसीसी विद्वान थे जिन्होंने अपनी पुस्तक **Beyond Ideology** (विचारधारा से अलग) **1967** में विचारधारा का अपचयनवाद सिद्धान्त दिया। जिसके अनुसार विचारधारा ने ही राजनीतिक सिद्धान्तों का पतन किया। इसी को विचाराधारात्मक अवसानवाद भी कहा गया है।
- दांते जर्मिनो कहा कि प्लेटो से लेकर हीगल तक राजनीतिक सिद्धान्तों को स्थान था लेकिन इसके बाद विचारधाराओं ने राजनीतिक सिद्धान्त पर आघात डाला।

  और इस पतन में दो विचारधाराओं की बड़ी भूमिका रही -

  (1) प्रत्यक्षवाद (2) मार्क्सवाद

- डेस्मंड डी ट्रेसी ने **विचारधारा** शब्द का प्रयोग किया था।
- **बर्मिनो** के अनुसार आगस्त काम्टे के **प्रत्यक्षवाद** और **कार्ल मार्क्स** के **वैज्ञानिक समाजवाद** ने राजनीतिक सिद्धांतों के पतन में भूमिका निभाई है।
  - ✓ 1850-1950 के काल को अंधा या काला युग कहते हैं जिसमें विचारधाराओं का अत्यधिक प्रभाव था।
  - ✓ **बर्मिनो** - राजनीतिक सिद्धांत एक अन्वेषण की निरंतर प्रक्रिया है जबकि विचारधारा अन्वेषण को समाप्त कर देती है।
  - ✓ **बर्मिनो** - उन राजनीतिक सिद्धांतों का पुनरुत्थान होगा क्योंकि विचारधाराएं धीरे-धीरे कमजोर हो रही हैं।

राजनीतिक सिद्धांतों का पुनरुत्थान

परंपरावादी

1. दांते बर्मिनो
2. इसाक/अल्फा बर्लिन
3. जीन ब्लॉडल
4. लियो स्ट्रॉस

- 1970 के दशक में राजनीति विज्ञान के अध्ययन ने मूल्यों को पुनः शामिल कर लिया। और विज्ञानवाद और प्रत्यक्षवाद जब सामाजिक समस्याओं का हल नहीं कर पाया तो इसे राजनीतिक सिद्धांतों का पुनरुत्थान कहा गया। उत्तर-व्यवहारवाद बाद और उत्तर-आधुनिकता राजनीतिक पुनरुत्थान की ही देन है।
- रॉबर्ट डहल ने इन विद्वानों को **परानुभववादी** कहा।
- **आइज्या बर्लिन** — राजनीतिक सिद्धान्त आज भी जीवित हैं और भविष्य में जीवित रहेंगे।
  - ✓ "विज्ञानवाद से हटकर पुनः मूल्यों को शामिल करना राजनीतिक सिद्धान्तों का पुनरुत्थान है।"
- **लियो स्ट्रॉस** — व्यवहारवाद और अनुभववाद '**गटर की विजय**' थी।
- राजनीतिक सिद्धान्त के पुनरुत्थान का समर्थन **नव-परम्परावादियों** ने किया। नव-परम्परावादियों में **जुवेनाइल, ऐरिक वोगेलिन, माइकल ओकशॉट, हन्ना आरेन्ट, मैरियम यंग** मुख्य हैं।
- **मैरियम यंग** ने रॉल्स की पुस्तक **'Theory of Justice'** को राजनीतिक सिद्धान्तों के पुनरुत्थान का आधार माना।
- इन्होंने अपनी पुस्तक **'Justice and Politics Difference - 1990'** में यह विचार दिया।
- **ऐरिक वोगेलिन** — राजनीति विज्ञान और राजनीतिक सिद्धान्त एक-दूसरे के पूरक हैं, विरोधी नहीं।
  - ✓ ऐरिक वोगेलिन राजनीति **फलसफावाद** के विरोधी थे।

विचारक	विरोधी
लियो स्ट्रॉस	प्रत्यक्षवाद
एरिक वोगेलिन	प्रज्ञानवाद
दांते बर्मिनो	विचारधारा
कार्ल पॉपर	इतिहासवाद
आइज्या बर्लिन	नैतिक एकत्ववाद
हरबर्ट मारक्यूजे	पूँजीवाद
हेबर मास	तार्किक प्रत्यक्षवाद / उत्तर आधुनिकता

प्रज्ञानवाद (Gnosticism)

अर्थ — स्वयं अपने विचार बनाकर उनको अन्य सभी पर लागू करना अर्थात् यथार्थ को अपनी दृष्टि से देखना। **जैसे** — हिटलर और मुसोलिनी के विचार प्रज्ञानवाद।

नैतिक एकत्ववाद (Moral Monism)

अर्थ — किसी एक तत्व को स्वीकार कर लेना और उसको नैतिक आधार पर इतना उच्च स्थान देना कि अन्य तत्वों को बिल्कुल भी स्वीकार नहीं करें।

2

CHAPTER

राज्य (State)

- **राज्य** राजनीति विज्ञान का केंद्रीय विषय है।
- राज्य शब्द लैटिन भाषा के **'Status'** शब्द से बना है जिसका अर्थ है— **स्तर** / **स्थिति**।
- राज्य के बारे में अलग-अलग विद्वान अलग-अलग शब्दों का प्रयोग करते हैं:
  - ✓ **प्लेटो:** Polis (शुद्ध राज्य)
  - ✓ **अरस्तू:** Koinonia
  - ✓ **बोंदा:** The Republica
  - ✓ **हॉब्स:** Commonwealth (इसमें समाज, राज्य और सरकार तीनों को शामिल करते हैं।)
  - ✓ **जॉन लॉक** / **रूसो:** समुदाय (Community)
  - ✓ **रोमन विचारक:** रेस रिपब्लिका (Res publica)
  - ✓ **ईसाई विद्वान:** क्रिश्चियाना रिपब्लिका
  - ✓ **मैकियावली** / **हीगेल:** राष्ट्र-राज्य (Nation-State)
  - ✓ **ईस्टन:** राजनीतिक व्यवस्था (Political System)

राष्ट्र-राज्य (Nation-State)

- वर्तमान में राज्य के लिए सर्वोत्तम शब्द **'राष्ट्र-राज्य' (Nation-State)** है।
- राष्ट्र-राज्य में **'राष्ट्र'** शब्द का अर्थ है— सामाजिक, सांस्कृतिक, संस्कृति, लिपि आदि के आधार पर आपसी लगाव।
- तथा **'राज्य'** शब्द का अर्थ राजनीतिक है, जिसका संबंध **नागरिकता** से है।
- **'राष्ट्र-राज्य'** शब्द का प्रयोग सबसे पहले **मैकियावली** ने किया तथा **'राज्य' (State)** शब्द का प्रयोग भी **मैकियावली** ने ही किया।

राज्य के विकास की निम्नलिखित सात अवस्थाएं मानी जाती हैं—

- कबिलाई राज्य
- पूर्वी राज्य (सिंधु घाटी सभ्यता वाला राज्य)
- यूनानी राज्य (प्लेटो, अरस्तु)
- रोमन राज्य
- सामंती राज्य
- राष्ट्र राज्य
- **विश्व राज्य — काल्पनिक राज्य की अवधारणा।**
  - ✓ विश्व राज्य एक काल्पनिक राज्य है जो यथार्थ में नहीं आया है लेकिन इसके कुछ संकेत दिखाई देने लगे हैं। जैसे— संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद को सदस्य राष्ट्रों की चेतावनी देने (अध्याय-VI) तथा सदस्य राष्ट्रों पर सैनिक कार्यवाही करने (अध्याय-VII) की शक्ति प्रदान की गयी है।
- यूरोपीय संघ भी विश्व राज्य की ओर किया गया एक प्रयास है।
- वैश्वीकरण के कारण विश्व राज्य की अवधारणा को बढ़ावा मिला।

राज्य की परिभाषाएं—

- "राज्य व्यक्ति का ही बड़ा रूप है" — **प्लेटो**
- "राज्य नदी, पहाड़, जंगल व चट्टानों से नहीं बनता बल्कि नागरिकों के चरित्र से बनता है" — **प्लेटो**
- "राज्य परिवार, कुटुम्ब का ही बड़ा रूप है जो धीरे-धीरे अस्तित्व में आया है" — **अरस्तू**
- "राज्य एक स्टॉक एक्सचेंज कम्पनी की तरह है" — **हरबर्ट स्पेंसर**
- "राज्य एक ईश्वरीय संस्था है" — **हीगल**
- "राज्य एक नैतिक संस्था है जो व्यक्ति की इच्छाओं को लागू करती है" — **T.H. ग्रीन**
- राज्य एक वर्गीय और शोषणकारी संस्था है। — **कार्ल मार्क्स**
- राज्य एक सुखवादी संस्था है। — **बेंथम**
- एक्वीनास के अनुसार राज्य व्यक्ति के विकास के लिए बनने वाली एक नैतिक और अनिवार्य संस्था है।
- मार्सीलिओ — राज्य एक शांति स्थापित करने वाली संस्था है।
- बोंदा — राज्य अनेक परिवारों तथा उनकी सामान्य संपत्ति की विधि संगत सरकार है। जिसमें संप्रभुता, शांति तथा विवेक का शासन होता है।
- "राज्य की व्यक्ति की सुरक्षा के लिए है" — **हॉब्स**
- "राज्य 'संपत्ति की सुरक्षा' के लिए आया है और ये समझौते का परिणाम है" — **लॉक**
- "राज्य एक सामूहिक साझेदारी है जिसमें वे सभी चीजें शामिल हैं जो कला, विज्ञान जीवित, मृत व्यक्ति और भविष्य में जन्म लेने वाले व्यक्ति भी शामिल हैं।" — **एडमंड बर्क**
- "राज्य वह सकारात्मक संस्था है जो व्यक्ति की स्वतंत्रता में सहायक है।" — **जे. एस. मिल**
- "राज्य सामूहिक हिंसा करने वाली संस्था है इसलिए इसे समाप्त कर देना चाहिए" — **गांधी**
- "राज्य अवरोधकों के लिए अवरोधक है" — **T.H. ग्रीन**
- "राज्य राजनीतिक रूप से संगठित लोगों का समूह है" — **ब्लंशली**
- "राज्य विज्ञान का प्रारंभ तथा अंत राज्य के साथ होता है" — **गार्नर**
- "राज्य ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो शासक और शासितों में बंटा हुआ भूमिगत समाज है और अपनी सीमा में आने वाली अन्य संस्थाओं पर सर्वोच्चता का दावा करता है" — **लास्की**
- "राज्य मानव की एक संगठित इकाई है और समाज का एक विशिष्ट भाग है" — **बर्गेस**
- "राज्य वह इकाई है जिसके पास दंड देने की शक्ति का एकाधिकार है" — **मैक्स वेबर**
- "राज्य एक निश्चित भू-भाग में रहने वाला राष्ट्र है जो कानून का लाभ लेने के लिए संगठित हुआ है" — **वुडरो विल्सन**

प्रकृति की दृष्टि से राज्य दो प्रकार के हैं —

- सावयवी राज्य / आंगिक राज्य
- यांत्रिक राज्य

सावयवी / आंगिक राज्य (Organic State)

- इस राज्य को '**जैविक राज्य**' भी कहते हैं।
- ये राज्य को प्राकृतिक संस्था मानता है।
- ये राज्य को व्यक्ति का ही बड़ा रूप मानता है।

- **अरस्तू** राज्य को व्यक्ति से पूर्वगामी मानता है।
- सावयववादी सिद्धांत राज्य की तुलना मानव शरीर से करता है इसलिए इसको **जैविक सिद्धांत** भी कहा जाता है।
- **प्लेटो, अरस्तू, कौटिल्य, हर्बर्ट स्पेंसर** आदि को सावयववादी विद्वान माना जाता है।
- **हॉब्स और रूसो** — सावयववादी विद्वान।

यांत्रिकी राज्य (Mechanical State)

- यांत्रिकी राज्य से तात्पर्य है — राज्य का निर्माण व्यक्ति ने अपनी सुविधाओं के विकास के लिए किया है इसलिए राज्य एक **साधन** है।
- ये व्यक्ति को **साध्य** और राज्य को **साधन** मानता है।
- यांत्रिकी राज्य की अवधारणा **उदारवाद** के निकट है।
- मुख्य समर्थक — **हॉब्स, लॉक, रूसो और पूंजीवादी विचारक**।

राज्य की उत्पत्ति के सिद्धांत (Theories of Origin of State)

1. दैवीय सिद्धांत (Divine Theory)

- ✓ इस सिद्धांत के जनक **होमर** थे।
- ✓ इस विचार के अनुसार राज्य **ईश्वर / भगवान की देन** है।
- ✓ होमर के अलावा **फिल्मोर (पैट्रिआर्क)**, **जेम्स** (प्रथम)।
- ✓ प्रथम (**The Law of Free Monarchy**) इसके समर्थक हैं।
- ✓ भारतीय विद्वान **मनु** भी इस विचार के समर्थक थे। मनुस्मृति में लिखा है "राजा को भगवान ब्रह्मा ने बनाया था"।
- ✓ "राजा को देवता कहना चाहिए क्योंकि वह पृथ्वी पर देवताओं जैसा व्यवहार करता है।" — **जेम्स प्रथम**
- ✓ "राजा पृथ्वी पर ईश्वर की सजीव मूर्ति है।" — **जेम्स प्रथम**
- ✓ दैवीय सिद्धांत के अन्य समर्थक — जर्मन दार्शनिक **कांट** और **हीगल** भी माने जाते हैं।
- ✓ इस विचार के विरोधी — **गिलक्राइस्ट, जे. एम. फिंजिस, हॉब्स, लॉक, ग्रोशियस** को माना जाता है।

2. मातृसत्तात्मक सिद्धांत (Matriarchal Theory)

- ✓ राज्य की उत्पत्ति का ये सिद्धांत **समाजशास्त्रीय अध्ययन** पर टिका हुआ है, जो ये मानता है कि राज्य सामाजिक अवस्था से आया है। जिस प्रकार परिवार में **माता मुखिया** होती है और माता परिवार के सदस्यों को आज्ञा देने लग जाती है और सदस्य माता के आदेश का पालन करने लग जाते हैं, यहीं से राज्य की उत्पत्ति हुई है।
- ✓ इस विचार के मुख्य समर्थक — **जैंक्स, मॉर्गन, मैकलैन, वाल्टेयर, डेविड ह्यूम, नील्शे** तथा **ओपनहाइमर** हैं।
- ✓ इस सिद्धांत का सबसे बड़ा विरोधी आलोचक — ब्रिटिश विद्वान **सर हेनरी मैन** थे, इन्होंने अपनी पुस्तक **Ancient Law (1861)** में मातृसत्तात्मक सिद्धांत का विरोध करके पितृसत्तात्मक सिद्धांत का समर्थन किया।सिद्धांत दिया।

3. पितृसत्तात्मक राज्य —

इसके अनुसार राज्य की उत्पत्ति पितृसत्तात्मक व्यवस्था से हुई है जिसमें पिता परिवार का मुखिया होता है और वह अपने परिवार के सदस्यों को आदेश देने लगा और सदस्य उसके आदेश का पालन करने लगे और वहीं से राज्य की उत्पत्ति हुई।

- ✓ **इस विचार का सबसे बड़ा समर्थक** — सर हेनरी मैन

4. शक्ति का सिद्धांत —

इस सिद्धांत के अनुसार राज्य की उत्पत्ति शक्ति के कारण से हुई है क्योंकि समाज में हमेशा शक्तिशाली निर्बल लोगों पर शासन करता है।

- ✓ **वाल्टेयर के अनुसार** — "पहला राजा भाग्यशाली योद्धा था।"
- ✓ **थ्रेसीमेकस के अनुसार** — "शक्तिशाली का हित ही न्याय है।"
- ✓ **ओपनहाइमर ने Wolf State (भेड़िया राज्य)** की अवधारणा दी जिसके अनुसार राज्य भेड़िये की तरह शक्ति का प्रतीक है।
- ✓ **माओ, नीत्शे, जॉर्ज सोरेल, कैटलिन, लासवेल, ट्रेट्स्के, मार्गेन्थो, मैकियावली** सभी विद्वान शक्ति को राज्य का मुख्य आधार मानते हैं।
- ✓ "राज्य आक्रमण व प्रतिरक्षा की सार्वजनिक शक्ति है जिसका मुख्य कार्य युद्ध करना है।" — **त्रीटस्के**
- ✓ शक्ति का सिद्धांत अतिवादी है और लोकतांत्रिक देशों में शक्ति को कानूनी रूप प्रदान कर दिया है, इसलिए **बोंदा** ने कहा था - "शक्ति डाकुओं के झुंड का आधार हो सकती है, राज्यों के का आधार नहीं हो सकती।"
- ✓ "शक्ति राज्य के विस्तार का आधार हो सकती है लेकिन उत्पत्ति का आधार नहीं हो सकती।" — **सीले**
- ✓ "समाज में जिस तत्व का सबसे कम प्रभाव है उसी तत्व को महत्वपूर्ण स्थान देना अनुचित है।" — **लीकॉक**

5. संविदावाद / समझौतावादी सिद्धांत —

- ✓ इस सिद्धांत के अनुसार न तो राज्य ईश्वर की देन है और न ही शक्ति का परिणाम है बल्कि राज्य एक समझौते का परिणाम है और उस समझौते से ही राज्य की उत्पत्ति हुई है।
- ✓ इस विचार के मुख्य समर्थक **हॉब्स, लॉक, रूसो** और प्राचीन विद्वान **कौटिल्य** को भी माना जाता है।
- ✓ **कौटिल्य** ने राज्य की उत्पत्ति का **'मत्स्य न्याय'** सिद्धांत दिया, जिसके अनुसार जिस प्रकार बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, उसी प्रकार शक्तिशाली व्यक्ति कमजोर व्यक्ति को परेशान करता है। इससे बचने के लिए राज्य की उत्पत्ति की गयी और यह निर्णय किया गया कि अन्न का 1/6 हिस्सा और मुद्रा का 1/10 हिस्सा राजा को दिया जायेगा और राजा बदले में (सुरक्षा प्रदान करेगा)।
- ✓ रॉल्स राज्य की उत्पत्ति के बारे में संविदावाद का समर्थक नहीं था लेकिन प्राथमिक वस्तुओं के वितरण में संविदावाद का समर्थन करता है।
- ✓ राज्य की उत्पत्ति के विकासवादी सिद्धांत के सभी समर्थक सम्भावित समझौते के सिद्धांत का विरोध करते हैं।
- ✓ संविदावादी सिद्धांत वर्तमान संकट समय में इसलिए आलोचना के पात्र हैं क्योंकि अभी तक कोई लिखित समझौते के परिणाम नहीं मिले हैं।

6. राज्य की उत्पत्ति का विकासवादी सिद्धांत —

- ✓ इस सिद्धांत के अनुसार राज्य न तो ईश्वर की देन है और न ही किसी समझौते का परिणाम है बल्कि धीरे-धीरे विकास का परिणाम है।
- ✓ इस विचार को सबसे पहले अरस्तू ने अपनी पुस्तक **Politics** में दिया था जिसके अनुसार राज्य परिवार और कुटुम्ब का ही बड़ा रूप है।
- ✓ आधुनिक विचारक मैकाइवर, गार्नर, एडमंड बर्क ने भी राज्य की उत्पत्ति के ऐतिहासिक और विकासवादी सिद्धांत का समर्थन किया है।
- ✓ "**मुझे राज्य का पहला स्वरूप परिवार में दिखाई दिया**" — मैकाइवर
- ✓ "राज्य न तो ईश्वर की सृष्टि है, न उच्च कोटि के शारीरिक बल का परिणाम न किसी समझौते का परिणाम और नहीं बल्कि धीरे-धीरे सामा० विकास का परिणाम है।" — गार्नर
- ✓ "**सामा० परम्पराएं राज्य के विकास का आधार हैं**" — एडमंड बर्क

- ✓ आधुनिक विचारकों में वाल्टर बेजहॉट और मैक्सी ने भी ऐतिहासिक सिद्धांत का समर्थन किया है।
- ✓ राज्य की उत्पत्ति का विकासवादी सिद्धांत सबसे अधिक व्यवहारिक है इसलिए इस विचार को सबसे अधिक वैज्ञानिक माना जाता है।
- ✓ विकासवादी सिद्धांत के अनुसार राज्य की उत्पत्ति के लिए निम्न तत्व उत्तरदायी थे —
  - प्राकृतिक व सामा० प्रेरणा
  - रक्त संबंध
  - जादू-टोने और धार्मिक अनुष्ठानों का प्रभाव
  - आर्थिक स्थितियां
  - प्राकृतिक आपदाओं का भय
  - शक्ति
- ✓ मैकाइवर के अनुसार रक्त संबंध से समाज और समाज से राज्य की उत्पत्ति हुई है।
- ✓ सर हेनरी मैन — राज्य के विकास में ऐतिहासिक तथ्य इस बात पर बल देते हैं कि राज्य की उत्पत्ति धीरे-धीरे विकास का परिणाम है।
- ✓ वह राज्य सबसे अच्छा है जो सबसे कम शासन करता है।→ उदारवाद/व्यक्तिवाद
- ✓ राज्य पुरुष वर्चस्व का यंत्र है। →नारीवाद
- ✓ सर्वसत्तावादी ही वास्तविक राज्य है। →अधिनायकवाद
- ✓ राज्य आत्माविहीन वस्तु है। → गांधीवाद
- ✓ राज्य विचारधारा का वर्चस्व है।→ ग्राम्शी
- ✓ राज्य एक यंत्र / मशीन है। →समझौतावाद
- ✓ राज्य एक ईश्वरीय संस्था है। → आदर्शवाद
- ✓ राज्य एक सुरक्षा कंपनी है। →हरबर्ट स्पेंसरवाद
- ✓ राज्य एक अनावश्यक बुराई है। → अराजकतावाद
- ✓ राज्य एक आवश्यक बुराई है। → व्यक्तिवादी
- ✓ राज्य अन्य समुदायों की तरह एक समुदाय है। →बहुलवादी
- ✓ राज्य सर्वोच्च समुदाय है। → एकलवादी

राज्य के कार्य — राज्य के कार्यों के आधार पर अनेक विचारधाराओं की उत्पत्ति हुई है।

1. उदारवाद —

- ✓ उदारवाद वह विचारधारा है जो व्यक्ति को राज्य से सामा०, आर्थिक और राजनीतिक स्वतंत्रता देने पर बल देता है।

उदारवाद के तीन मुख्य प्रकार हैं —

- ✓ **परम्परागत उदारवाद —**
  - इसको नकारात्मक स्वतंत्रता, व्यक्तिवाद, शास्त्रीय उदारवाद, अहस्तक्षेपवाद और लैसेजफेयरवाद भी कहते हैं।
  - ये उदारवाद 18वीं और 19वीं शताब्दी में अधिक लोकप्रिय हुआ।
  - इस विचारधारा के मुख्य समर्थक **J.S. मिल**, **हरबर्ट स्पेंसर**, **एडम स्मिथ**, **माल्थस** और **रिकार्डो** थे।
  - यह उदारवाद व्यक्ति को पूर्ण रूप से स्वतंत्रता देना चाहता है और ये मानता है कि राज्य को कम से कम कार्य करना चाहिए क्योंकि व्यक्ति विवेकशील है और अपना भला व बुरा जानता है।
  - शास्त्रीय उदारवाद/व्यक्तिवाद प्रतिबंध रहित स्वतंत्रता की बात करता है जो कि अराजक स्थिति पैदा कर देगी, इसलिए व्यक्तिवाद अत्यधिक लम्बा नहीं चला और 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में **आधुनिक उदारवाद** अस्तित्व में आया।

- **आधुनिक उदारवाद** — ये प्रतिबंधित स्वतंत्रता पर बल देता है।
- ये लोक कल्याण को स्वीकार करता है इसलिए इसको **कीन्सवाद (Keynesianism)** भी कहा जाता है।
  - ☞ कीन्स एक अर्थशास्त्री थे जो उदारवाद के साथ लोक कल्याण पर बल देते थे।
- इसके सबसे बड़े समर्थक **T.H. ग्रीन** थे।
- (आ० उ०) इसने कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का विकास किया और 1942 में '**बेवरीज रिपोर्ट**' के बाद कल्याणकारी राज्य और अधिक लोकप्रिय हो गया। लेकिन इस कल्याणकारी राज्य ने राज्यों के आर्थिक ढांचे को बिगाड़ दिया। परिणामस्वरूप 1980 के दशक में ब्रिटेन में प्रधानमंत्री **मार्गरिट थैचर** ने उदारवाद का नया रूप दिया उसे **स्वच्छंदतावाद, उदार समतावाद / थैचरवाद** भी कहा गया।
- **उदार समतावाद / नववामवाद / स्वच्छंदतावाद** —
  - ☞ ये उदारवाद कल्याणकारी राज्य का विरोध करता है क्योंकि कल्याणकारी राज्य प्रतियोगी समाज का निर्माण नहीं कर पाता है और प्रतियोगी समाज के बिना शक्तिशाली समाज का निर्माण नहीं हो पाता है।
- स्वच्छन्दतावाद का समर्थन अमेरिका में राष्ट्रपति **रोनाल्ड रीगन** ने किया और जर्मनी में **कोहलन** ने किया और भारत में **डॉ. मनमोहन सिंह** ने किया।
- राज० सिद्धांतों में इस विचार का समर्थन नव-उदारवादी विद्वान **रॉबर्ट नोजिक, मिल्टन फ्रीडमैन, जॉन रॉल्स** तथा **गैल्ब्रेथ, F.A. हियक** माने जाते हैं।
- उदारवाद एक नदी की धारा की तरह है जिसमें नये विचार लोकप्रिय होते रहते हैं और वर्तमान उदारवाद बाजारवाद पर टिका हुआ है इसलिए इसको **वैश्वीकरण, भूमण्डलीकरण / पूंजीवादी समाज** भी कहा जाता है।
- कल्याणकारी राज्य शब्द का सबसे पहले प्रयोग करने वाला **आर्क बिशप टेम्पिल** था जिसने अपनी पुस्तक "**Citizen and State**" नामक में किया था।
- कल्याणकारी राज्य को '**पितृवादी राज्य**' भी कहा जाता है जिसका अर्थ है जैसे पिता अपने बच्चों की सेवा करता है वैसे ही राज्य अपने नागरिकों की सेवा करे।
- कल्याणकारी राज्य समाजवादी राज्य के निकट है।
- **पैतृक राज्य** '**वंशानुगत राज्य**' को कहा जाता है।

2. समाजवाद —

✓ समाजवाद शब्द का प्रयोग ब्रिटिश विद्वान **रॉबर्ट ओवन** ने किया था।

समाजवाद के निम्न लक्षण होते हैं —

✓ ये उदारवाद और पूंजीवाद का विरोधी है।

✓ ये समानता पर बल देता है, स्वतंत्रता पर नहीं।

✓ ये उत्पादन के साधनों पर राज्य का नियंत्रण स्थापित करना चाहता है।

✓ समाजवाद आरक्षण व तात्विक न्याय का समर्थन करता है।

✓ समाजवाद सामा० सहयोग पर बल देता है इसलिए गरीबी, भुखमरी इनका विनाश करना चाहता है।

✓ समाजवाद नागरिकों की सेवा पर बल देता है।

समाजवाद के प्रकार —

- **स्वप्नलोकिक / काल्पनिक समाजवाद**
  - ✓ ये समाजवाद मार्क्सवाद से पूर्व अस्तित्व में आया।
  - ✓ इस समाजवाद के तीन मुख्य समर्थक थे —
    - **रॉबर्ट ओवन (ब्रिटेन)** — Social System-1821
    - **चार्ल्स फूरियर (फ्रांस)**
    - **सेंट साइमन (फ्रांस)**
  - ✓ रॉबर्ट ओवन ने अपनी पुस्तक **"Social System - 1821"** में पहली बार 'समाजवाद' शब्द का प्रयोग किया।
  - ✓ इनको 'ब्रिटिश समाजवाद का जनक' भी कहा जाता है।
  - ✓ रॉबर्ट ओवन को ही '**सहकारिता का जनक**' माना जाता है।
  - ✓ अमेरिका के न्यू लेनार्क शहर में '**New Harmony**' (नवीन सामंजस्य) बस्ती बसाने का प्रयास किया लेकिन ये सफल नहीं हुआ।
  - ✓ फ्रांसीसी विद्वान **चार्ल्स फूरियर** ने अपनी पुस्तक '**न्यू क्रिश्चियनिटी**' में काल्पनिक समाजवाद का विचार दिया जिसका प्रभाव फ्रांस की क्रांति पर भी दिखाई दिया।
  - ✓ चार्ल्स फूरियर ने फ्रांस में **फैलेक्स (Phalanx)** बस्तियां बसाने का प्रयास भी किया लेकिन वह भी सफल नहीं हुआ।
  - ✓ सेंट साइमन भी फ्रांसीसी विद्वान थे।
  - ✓ **वैज्ञानिक समाजवाद** — जनक: **कार्ल मार्क्स**।
  - ✓ इसके अनुसार वर्ग संघर्ष के कारण समाज में अनेक अवस्थाएं आएंगी और इन अवस्थाओं में पूंजीपति वर्ग श्रमिक वर्ग का शोषण करेगा तो एक दिन श्रमिक वर्ग **खूनी क्रांति** करेगा और खूनी क्रांति के बाद जो अवस्था आएगी वह समाजवाद कहलाएगा। और समाजवाद की अंतिम स्थिति **साम्यवाद** कहलाएगी जिसमें वर्गविहीन और राज्यविहीन अवस्था आ जाएगी जिसमें न कोई राज्य होगा और न कोई वर्ग होगा।
  - ✓ **संशोधनवादी समाजवाद** — संशोधनवाद से तात्पर्य है मार्क्स के विचारों में परिवर्तन / सुधार।
  - ✓ **बर्नस्टीन (जर्मन दार्शनिक)** को संशोधनवादी समाजवाद का सबसे बड़ा प्रवर्तक माना जाता है।
  - ✓ इस समाजवाद को **विकासवादी समाजवाद** भी कहा जाता है।
  - ✓ बर्नस्टीन के अनुसार निम्नलिखित तीन सुधार मार्क्स के विचारों में हुए हैं —
    - उदारवादी युग में श्रमिक वर्ग की स्थिति में सुधार हुआ है। शोषण नहीं।
  - ✓ मध्यम वर्ग का विस्तार हुआ है।
  - ✓ उद्योगों का केन्द्रीकरण नहीं बल्कि विकेन्द्रीकरण हुआ है।

फेबियन समाजवाद —

यह ब्रिटेन का समाजवाद है।

- 1884 में ब्रिटेन में 'फेबियन सोसाइटी' का निर्माण किया गया।
- फेबियन शब्द रोमन सेनापति का नाम था जो धीरे-धीरे अवसर देखकर शत्रु पर आक्रमण करता था और इसी से प्रेरित होकर फेबियन समाजवाद धीरे-धीरे 'क्रमिक सुधारों' पर बल देने लगा।
- ये ब्रिटेन के बुद्धिजीवियों में समाजवाद की स्थापना करना चाहता था।
- ये ब्रिटेन की लेबर पार्टी के विचारों से प्रभावित था।
- इसके प्रमुख समर्थक सिडनी वेब, बियट्रिस वेब, ग्राहम वालस, लास्की, जॉर्ज बर्नार्ड शॉ हैं।
- एंगेल्स ने इस 'समाजवाद' की आलोचना करते हुए कहा था ये सड़ा-गला समाजवाद है।

श्रेणी समाजवाद (Guild Socialism / गिल्ड समाजवाद) —

- ये समाजवाद 1915 - 1925 के बीच ब्रिटेन में लोकप्रिय हुआ था।
- इसमें सामाजिक श्रेणियां बनाकर कार्य करने पर बल दिया गया जैसे किसान-किसान को चुने, मजदूर-मजदूर को चुने, शिक्षक-शिक्षक को चुने।
- श्रेणी समाजवाद व्यवसायिक प्रतिनिधित्व के निकट है और व्यवसायिक प्रतिनिधित्व का सबसे बड़ा समर्थक जी.डी.एच. कोल था।
- श्रेणी समाजवाद अधिक लम्बे समय तक नहीं चल पाया क्योंकि व्यवसाय के अनुसार संघों का निर्माण व्यवहारिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

श्रमिक / श्रम समाजवाद / संघवाद —

ये फ्रांस का समाजवाद है जो फेबियन समाजवाद के समकालीन है।

- इस समाजवाद के जनक **जॉर्ज सोरेल** थे।
- ये समाजवाद मजदूर / श्रमिक संघों के बल प्रयोग के द्वारा उद्योगों और फैक्ट्रियों पर नियंत्रण करने पर बल देते हैं।
- ये राजनीतिक रूप से अराजकतावाद (राज्य को समाप्त करना) तथा आर्थिक रूप से श्रमिक संघवाद के समर्थक थे।
- इस समाजवाद में हिंसा, तोड़फोड़, हड़ताल सीधी कार्यवाही करना आदि शामिल हैं।

लेनिन का समाजवाद (लेनिनवाद) —

लेनिन के नेतृत्व में 1917 में सोवियत रूस में बोल्शेविक क्रांति हुई।

- बोल्शेविक क्रांति का नारा — **रोटी, भूमि, शांति।**
- लेनिन ने अपनी पुस्तक **"State and Revolution - 1917"** में समाजवाद के कुछ विचार दिये।
- इस पुस्तक में **लोकतांत्रिक केंद्रवाद** की अवधारणा दी।

"What is to be done - 1902"

लोकतांत्रिक केंद्रवाद —

लोकतांत्रिक केंद्रीकरण का अर्थ है शासन का वह रूप जिसमें निर्वाचन के बाद सरकार का गठन होता हो लेकिन एकदलीय शासन व्यवस्था हो दूसरे दल का गठन ही ना किया जा सके जैसे - चीन में साम्यवादी दल का शासन।

- लोकतांत्रिक केंद्रवाद में विपक्षी दल नहीं होता है और एक ही दल में कठोर अनुशासन पाया जाता है।
- **"साम्राज्यवाद पूँजीवाद की अंतिम अवस्था है।"** — लेनिन
- विचारधारा को संगठन के लिए आवश्यक माना क्योंकि विचारधारा मजदूरों में आर्थिक चेतना लाती है।
- कार्ल मार्क्स विचारधारा को **मिथ्या चेतना** मानता था।
- श्रमिक क्रांति के साथ-साथ किसानों के सहयोग को भी स्वीकार करता है।

स्टालिनवाद —

लेनिन की मृत्यु के बाद 1924 में स्टालिन सोवियत रूस के राष्ट्रपति बने उन्होंने साम्यवाद का 'वास्तविक स्वरूप' लागू किया तथा **एकदेशीय समाजवाद** की अवधारणा दी जिसका तात्पर्य था समाजवाद को एक देश में इतना शक्तिशाली बना दो की अन्य देश इससे प्रेरित होकर समाजवाद को लागू करें।

- मार्क्स और लेनिन का समाजवाद **अंतर्राष्ट्रीयवादी** था जैसे मार्क्स कहता था "दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ तुम्हारे पास खोने के लिए बेड़ियाँ के अलावा कुछ भी नहीं है।"

माओ-त्से तुंग (माओ ज़ेडांग) —

- **New Democracy** — नवीन लोकतंत्र
- **Cultural Revolution** — सांस्कृतिक क्रान्ति

  "शक्ति बंदूक की नली से निकलती है।"
- **"On Contradiction"** (विरोध / द्वन्द्व)
- माओ राज्य को **किसानों की क्रांति** के माध्यम से परिवर्तित करना चाहता है जबकि लेनिन **श्रमिक क्रांति** पर बल देता था।

जर्मन समाजवाद — फर्डिनेंड लासाल

- इस समाजवादी क्रांति में किसी हिंसात्मक क्रांति को कोई स्थान नहीं दिया बल्कि लोकतांत्रिक तरीके से समाजवादी विचारधारा के लोगों को विधान मण्डल और सरकारों में प्रवेश करके समाजवादी नीतियां बनानी चाहिए ताकि समाजवाद का प्रचार-प्रसार हो।

समाजवाद की आलोचना —

- समाजवाद की सबसे अधिक आलोचना **कार्ल पॉपर** ने अपनी पुस्तक **"Open Society and its enemy - 1945"** में की।
- कार्ल पॉपर ने मार्क्स, हीगल और प्लेटो को **'खुले समाज का शत्रु'** कहा है।
- **C.E.M. जोड़** के अनुसार "समाजवाद वह टोपी है जिसको चाहे जो पहन लेता है इस कारण इसका रूप बिगड़ गया है।"
- संशोधनवादी विचारक मार्क्सवादी समाजवाद की आलोचना करते हैं क्योंकि मार्क्सवादी समाजवाद **हिंसक क्रांति** पर बल देता है।
- बाकुनिन के अनुसार सोवियत रूस में सर्वहारा वर्ग की तानाशाही नहीं बल्कि **सर्वहारा पर तानाशाही** थी।
- समाजवादी विचारधारा अलग-अलग राष्ट्रों में अलग-अलग प्रकार की थी इसलिए **रेमजे म्योर** ने कहा था — **"समाजवाद उस गिरगिट की तरह है जो समय-समय पर अपना रंग बदलता रहता है।"**
- क्रॉसमैन ने अपनी पुस्तक **"Socialism and New Despotism (समाजवाद और नवीन तानाशाही) - 1956"** में समाजवाद को नवीन तानाशाही कहा।
- लॉर्ड हिवर्ट — नौकरशाही नवीन तानाशाही।

3. अधिनायकवाद / निरंकुशवाद के अनुसार राज्य के कार्य —

- **अधिनायकवाद की उत्पत्ति के मुख्य कारण —**

  प्रथम विश्व युद्ध के बाद इटली और जर्मनी में अधिनायकवाद सामने आया था और द्वितीय विश्व युद्ध का उत्तरदायी था।
  - ✓ वर्साय की संधि में इटली व जर्मनी का अपमान।
  - ✓ 1930 की आर्थिक मंदी के कारण यूरोपियन देशों में आक्रोश।
  - ✓ राष्ट्रसंघ की असफलता।
  - ✓ लोकतंत्र के प्रति निराशा।
  - ✓ संसदीय लोकतंत्र व प्रजातंत्र को सभी देशों ने स्वीकार नहीं किया।
  - ✓ **अधिनायकवाद राज्य को 'साध्य' और व्यक्ति को 'साधन' मानता है।**

    "सब कुछ राज्य में है, राज्य के बाहर कुछ नहीं है।" — मुसोलिनी
  - ✓ अधिनायकवाद आदर्शवादी विचारक **हीगल और रूसो** के विचारों से प्रभावित है। (अधिनायकवाद के बौद्धिक जनक)

- ✓ अधिनायकवाद व्यक्ति पूजा में विश्वास करता है।

  "आज्ञापालन करो, विश्वास करो और संघर्ष करो।" — मुसोलिनी

  "शासक कभी गलत नहीं हो सकता।" — मुसोलिनी
- ✓ साम्राज्यवाद में विश्वास।
- ✓ हिंसा और युद्ध को राज्य के लिए अनिवार्य मानता है।

  "पुरुषों के जीवन में युद्ध का वही महत्व है जो महिलाओं के लिए मातृत्व।" — **मुसोलिनी**

  "मैं इतिहास के पन्नों पर शेर के पंजों की तरह निशान छोड़ना चाहता हूँ।" — **मुसोलिनी**

  "जो देश युद्ध लड़ता है वो नदी के पानी की तरह साफ रहता है और जो देश युद्ध नहीं लड़ता है वह तालाब के पानी की तरह सड़ जाता है।" — **मुसोलिनी**

लोकतंत्र एवं संसदीय शासन प्रणाली का विरोधी —

"लोकतंत्र सड़ा हुआ तंत्र है और संसदीय प्रणाली मूर्ख लोगों की बातूनी दुकान है।" — **मुसोलिनी**

- ➢ **अंतर्राष्ट्रीयवाद का विरोधी और उग्र राष्ट्रवाद का समर्थन —**
  - ✓ हिटलर के अनुसार जर्मन लोगों की नसों में शुद्ध रक्त बहता है।
  - ✓ हिटलर के अनुसार भूरी आँखों वाले जर्मन ही असली आर्यन हैं।
  - ✓ इस कथन से नस्लवाद दिखाई देता है इसलिए अधिनायकवाद को **नस्लवाद का समर्थक** माना जाता है।
  - ✓ स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का विरोध तथा उत्तरदायित्व, आज्ञापालन और अनुशासन पर बल।
- ➢ **पूँजीवाद का समर्थक —**
  - ✓ अधिनायकवाद पूँजीवाद का समर्थक है।

  "फासीवाद, पूँजीवाद की लड़खड़ाती व्यवस्था का अंतिम सहारा है।" — लास्की
- ➢ इस विचारधारा में यह विरोधाभास है कि पूँजीवाद लोकतांत्रिक देशों का लक्षण है और अधिनायकवाद लोकतांत्रिक देशों के विरुद्ध ही अस्तित्व में आया था।
- ➢ **विचारधारा व सिद्धांतों का अभाव —**
  - ✓ **"मेरा कार्य काम करना है बातें करना नहीं।" — मुसोलिनी**
  - ✓ **"हमारी कोई विचारधारा नहीं है।" — मुसोलिनी**
- ➢ विवेक और बुद्धि में अविश्वास।
- ➢ तार्किकता में अविश्वास।
- ➢ अभिजन वर्ग को शासन व्यवस्था का आधार नहीं मानता है।
- ➢ **अधिनायकवादी राज्य —**
  - ✓ **क्यूबा** — फिदेल कास्त्रो / राउल कास्त्रो (भाई)
  - ✓ **स्पेन** — फ्रेंको
  - ✓ **पुर्तगाल** — सालाज़ार
  - ✓ **जर्मनी** — हिटलर
  - ✓ **इराक** — सद्दाम हुसैन
  - ✓ **लिबिया** — कर्नल गद्दाफी — "गुटनिरपेक्ष संगठन अंतर्राष्ट्रीय धर्म का मजाक है" — आंदोलन
  - ✓ **इटली** — मुसोलिनी

- ✓ **उत्तरी कोरिया** — किम जोंग-उन है।
- ✓ **वेनेजुएला** — ह्यूगो शावेज
- ✓ **ईरान** — अयातुल्ला अली खुमैनी (1979 इस्लामिक क्रांति)
- ✓ **चीन** — माओ-त्से तुंग

➢ **आदर्शवाद के अनुसार राज्य —**

- ✓ परंपरागत आदर्शवाद का जनक **प्लेटो** था और आधुनिक आदर्शवाद का जनक **कांट** को माना जाता है।
- ✓ कांट और हीगल जर्मनी के आदर्शवादी विद्वान थे इसलिए इनको **उग्र आदर्शवादी विद्वान** भी कहा जाता है।
- ✓ कांट के आदर्शवाद को **बौद्धिक आदर्शवाद** भी कहा जाता है।
- ✓ **हीगल का आदर्शवाद** — निरपेक्ष आदर्शवाद
- ✓ **प्लेटो का आदर्शवाद** — नैतिक आदर्शवाद
- ✓ ग्रीन, ब्रैडले और बोसांके ब्रिटेन के आदर्शवादी थे इसलिए इनको **उदार आदर्शवादी** माना जाता है।
- ✓ **आदर्शवादी राज्य को 'साध्य' और व्यक्ति को 'साधन' मानते हैं।**
- ✓ आदर्शवादी राज्य को पवित्र, नैतिक, ईश्वरीय और सर्वशक्तिमान मानते हैं। — "प्रत्येक मनुष्य केवल मनुष्य होने के नाते राज्य से सर्वोच्च नहीं हो सकता।" — **कांट**
- ✓ रूसो आदर्शवादी विद्वान था क्योंकि वह सामान्य इच्छा का व्यवहारिक सिद्धांत नहीं दे पाया लेकिन उन्होंने सामान्य इच्छा में शामिल करने के लिए बल प्रयोग करने का समर्थन किया।
  - ✓ "आदर्शवाद एक सर्वाधिकारवादी विचारधारा है।" — **हीगल**
  - ✓ "राज्य मानवीय चेतना का विराट रूप है।" — **हीगल**
  - ✓ "राज्य मनुष्य की स्वतंत्रता की सर्वोच्च अभिव्यक्ति है।" — **हीगल**
  - ✓ "राज्य पृथ्वी पर ईश्वर का अवतरण है।" — **हीगल**
  - ✓ "राज्य और कानून का पालन करने में ही स्वतंत्रता निहित है।" — **हीगल**
  - ✓ "राज्य बाधाओं में बाधक है।" — **T.H. ग्रीन**
- ✓ **अराजकतावादियों के अनुसार राज्य** — अराजकतावाद राज्य को समाप्त करना चाहता है क्योंकि राज्य एक बाहरी संस्था है और व्यक्ति का जब तक स्वयं का स्वयं पर नियंत्रण नहीं होगा तब तक राज्य की कोई उपयोगिता नहीं रहेगी।

प्रमुख अराजकतावादी विद्वान

शांतिप्रिय अराजकतावादी	**क्रांतिकारी अराजकतावादी**
लियो टॉलस्टॉय	प्रूधों
हेनरी डेविड थोरो	बाकुनिन
रस्किन	क्रोपोटकिन
गांधी	विलियम गॉडविन

प्रूधों की अपनी पुस्तक - Philosophy of Poverty (दरिद्रता का दर्शन)

➢ **Poverty of Philosophy — मार्क्स**

- ✓ "संपत्ति चोरी है और संपत्तिवान चोर हैं।" — **प्रूधों**
- ✓ "राज्य आत्मा विहीन मशीन है।" — **गांधी**
- ✓ "मैं राज्य की शक्ति में किसी भी प्रकार की वृद्धि को भय के रूप में देखता हूँ।**"** — **गांधी**

राज्यों के प्रकार

1. **पुलिस राज्य** — जो राज्य केवल शांति और सुरक्षा बनाये रखता है उसको पुलिस राज्य कहा जाता है।
2. **पितृवादी राज्य** — जो राज्य अधिक से अधिक जनता का कल्याण करता है (कल्याणकारी राज्य) पितृवादी राज्य कहलाता है।
3. **उपग्रही राज्य** — वह राज्य जो पूरी तरह से दूसरे राज्य पर निर्भर हो, जैसे: भूटान।
4. **धूर्त राज्य** — वह राज्य जो अंतर्राष्ट्रीय कानूनों को स्वीकार नहीं करता हो उसको धूर्त राज्य कहा जाता है।
   - ✓ शीत युद्ध के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति **रोनाल्ड रीगन** ने सोवियत रूस को धूर्त राज्य कहा था।
   - ✓ 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका पर हुए आतंकी आक्रमण के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति **जॉर्ज W बुश** ने 2002 में इराक, ईरान और उत्तरी कोरिया को **"Axis of Evil" (खलनायक की धुरी)** कहा था।
   - ✓ अमेरिकी विद्वान **नोम चोमस्की** ने अपनी पुस्तक **"Rogue State" (धूर्त राज्य) 2000** में अमेरिका को धूर्त राज्य कहा और कहा कि इराक, अफगानिस्तान, यूगोस्लाविया में अमेरिका ने शांति भंग करके एक धूर्त राज्य का परिचय दिया है।
   - ✓ 2006 में नोम चोमस्की ने **"असफल राज्य" (failed state)** नामक पुस्तक लिखी जिसका तात्पर्य था जो राज्य अपनी जनसंख्या, अपनी संपत्ति, अपनी भूमि पर नियंत्रण नहीं बनाकर रख पाते हैं उन राज्यों को विफल राज्य कहा जाता है जिसमें **सूडान, यूगांडा** जैसे देश शामिल हैं।
5. **Soft State (नरम राज्य)** — प्रसिद्ध समाजशास्त्री **गुन्नार मिर्डल (Gunnar Myrdal)** ने विकासशील देशों का अध्ययन किया और 1968 में अपनी पुस्तक **"Asian Drama" (1968)** में भारत जैसे देशों के संदर्भ में 'सॉफ्ट स्टेट' की अवधारणा दी और भारत को इस श्रेणी में रखा।
   - ✓ गुन्नार मिर्डल ने भारत में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और सांस्कृतिक मूल्यों में कानून को तोड़ने वाले को अधिक सम्मान दिया जाता है।
6. **बफर राज्य (Buffer State)** — दो शक्तिशाली राज्यों के मध्य वह कमजोर राज्य जो दोनों देशों से संतुलन बनाने का प्रयास करता है।
   - ✓ जैसे- नेपाल भारत और चीन के बीच एक बफर राज्य है।
7. **भूबंधीय राज्य (Landlocked State)** — वह राज्य जो चारों तरफ से भूमि से घिरा हुआ हो और जिसके किसी भी ओर जलीय सीमा (समुद्री सीमा) नहीं लगती हो।
   - ✓ जैसे- नेपाल, भूटान, अफगानिस्तान आदि।
   - ✓ भूबंधीय राज्यों को कूटनीतिक और विदेश नीति की दृष्टि से कमजोर राज्य माना जाता है क्योंकि सुरक्षा और व्यापार में समुद्री सीमा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
8. **अल्पतम राज्य (Minimal State)** — ये व्यक्तिवादी और उदारवादी विचारधारा वाले देशों में पाया जाता है, इसको **अहस्तक्षेपवादी राज्य** भी कहते हैं।
   - ✓ इस राज्य के अनुसार व्यक्ति को पूर्ण रूप से स्वतंत्रता होनी चाहिए और राज्य कम से कम कार्य करें। — **"राज्य एक आवश्यक बुराई है।"**
9. **राष्ट्र विहीन राज्य** — वह राज्य जो राजनीतिक इकाई तो है लेकिन सांस्कृतिक रूप से एकता का अभाव पाया जाता है, ऐसे राज्य को राष्ट्र विहीन राज्य कहा जाता है।
10. **अतिविकसित राज्य (Over-developed State)** — **हम्जा अलवी** नामक विद्वान ने अपनी पुस्तक **"The State in Post-Colonial Society" (उत्तर-औपनिवेशिक समाज में राज्य)** में लिखा है कि आज विश्व के अनेक देशों में नौकरशाही, सामंतवर्ग, बनीवर्ग और सेना ही राज्य पर नियंत्रण रखती हैं। ये पूँजीवादी मॉडल का नया रूप है जिसमें एक वर्ग नहीं बल्कि अनेक वर्ग व्यवस्था पर नियंत्रण रखते हैं।

- ✓ अतिविकसित राज्य इसलिए कहा जाता है कि समाज के विकसित वर्ग (नौकरशाही, सामंती, सेना आदि) व्यवस्था पर नियंत्रण कर रहे हैं।
- ✓ **यह बोनापार्टवाद के निकट है।**
  - इसके अनुसार राज्य किसी एक वर्ग का उपकरण नहीं है बल्कि **सापेक्ष स्वायत्तता (Relative Autonomy)** है जिसका अर्थ है अनेक वर्गों के नियंत्रण में है।

11. तटस्थ राज्य (Neutral State) — वे राज्य जो अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और घटनाओं पर किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं देते हैं।

- ✓ जैसे- लम्बे समय तक **'स्विस' (Switzerland)** तटस्थ देश रहा।

12. राज्य विहीन राष्ट्र — वह राष्ट्र जो सांस्कृतिक रूप से तो अस्तित्व में हो लेकिन भौगोलिक रूप से ज़मीन नहीं हो, ऐसे राष्ट्र को **राज्य विहीन राष्ट्र** कहा जाता है। जैसे - 1948 से पहले **इज़राइल**।

13. खंडित राज्य — एक देश के भू-भाग के अनेक टुकड़े हों उस देश को खंडित राज्य कहा जाता है, जैसे- **इंडोनेशिया**।

14. सूक्ष्म राज्य — वह राज्य जो भौगोलिक रूप से बहुत छोटा हो, जैसे- **वैटिकन सिटी**।

15. बहुराष्ट्रीय राज्य — एक राज्य के अंदर अनेक नृजातीय/धार्मिक समूह इस प्रकार से संगठित हों कि वे अपनी स्वतंत्र पहचान प्रकट करते हों। जैसे- भूतपूर्व **सोवियत रूस** में चेचन, उज़्बेक, तुर्क अलग-अलग राष्ट्रीयताएँ थीं।

16. मध्यम राज्य / उप राज्य (Para State) — राज्य का वह स्वरूप जिसमें न तो वह पूर्ण रूप से स्वतंत्र राज्य होता है और न ही किसी देश के पूर्ण रूप में नियंत्रण में होता है, ऐसे राज्य को उपराज्य कहते हैं। जैसे- **चेचन्या**।

- ✓ यह अपने आप को स्वतंत्र देश मानता है जबकि रूस चेचन्या को अपना क्षेत्र मानता है।

17. उपजीवी / किरायाजीवी राज्य (Rentier State) — वे राज्य जो आर्थिक रूप से दूसरे राज्यों पर निर्भर हों उन्हें उपजीवी / किरायाजीवी राज्य कहते हैं। जैसे - अरब देश पूर्णतया तेल के उत्पादन और निर्यात पर निर्भर हैं।

- ✓ **भारतीय विद्वान अतुल कोहली** ने राज्य व्यवस्थाओं का अध्ययन करने के लिए चार देशों का अध्ययन किया -
  - भारत
  - ब्राज़ील
  - नाइजीरिया
  - द० कोरिया
- ✓ **पुस्तक** — "The Success of India's Democracy" (2001)
- ✓ इसमें भारतीय लोकतंत्र की सफलता के कुछ कारण बताए।
- ✓ द० कोरिया को औद्योगिकीकरण और पूँजीवाद का समर्थक बताया लेकिन श्रमिकों के दमन पर आलोचना भी की।
- ✓ द० कोरिया को कोहली ने **'सहचारी पूँजीवादी राज्य' (Associative Capitalist State)** कहा।
- ✓ अतुल कोहली के अनुसार नाइजीरिया में एक नवीन अभिजन वर्ग पैदा हो गया है इसलिए ये **नवीन पैतृक राज्य (Neo-Patrimonial State)** का लक्षण है।
- ✓ ब्राज़ील में भी नाइजीरिया जैसा ही एक नवीन पैतृक वर्ग तैयार हो गया है।

18. खंडित बहुवर्गीय राज्य (Fragmented-Multiclass State) — भारत को इस श्रेणी में रखा है जिसका अर्थ है कई वर्ग पाए जाते हैं, प्रत्येक वर्ग लोककल्याण व पुनर्वितरण पर बल देता है, नागरिक संघ भी हैं लेकिन राजनीतिक संस्थाएं कमजोर हैं।

19. समपार्श्वीय राज्य (Prismatic Society) — ये अवधारणा **फ्रेडरिक रिग्स (Fred W. Riggs)** ने दी थी। ऐसे राज्य जहाँ भ्रष्टाचार, लाल-फीताशाही, जाति और धर्म के नाम पर नियुक्तियां, इस प्रकार के राज्य प्रिजमेटिक राज्य कहलाते हैं।

- ✓ भारत को इस प्रकार के राज्यों की श्रेणी में रखा है।

20.उपकरणात्मक राज्य (Instrumental State) — इस सिद्धांत के समर्थक **पोलेंजा (Poulantzas)** व **मिलीबैंड (Miliband)** थे।

- ✓ ये मार्क्स के इस विचार से सहमत नहीं थे कि राज्य एक पूँजीपति वर्ग ने बनाया है बल्कि इनके अनुसार राज्य **"शासक वर्ग के हाथों का उपकरण"** है।
- ✓ शासक वर्ग संरचनाओं के माध्यम से नियंत्रण स्थापित करता है अर्थात सामा., राज. संरचनाएं नियंत्रण रखती हैं, नियंत्रण अकेला राज्य का न होकर अनेक संरचनाओं का होता है जिसमें शैक्षिक, धार्मिक संरचनाएं भी शामिल हैं। ऐसे राज्य को **संरचनात्मक राज्य / राज्य का संरचनावादी सिद्धांत** भी कहा जाता है।

राज्य के अंग — आधुनिक काल में राज्य के चार अंग माने गये -

1. **जनसंख्या**
2. **भू-भाग**
3. **सरकार**
4. **सम्प्रभुता / प्रभुसत्ता**

जनसंख्या —

- ➢ जनसंख्या राज्य का **भौतिक अंग** है।
- ➢ **प्लेटो** के अनुसार एक आदर्श राज्य की जनसंख्या **5040** होनी चाहिए।
- ➢ **रूसो** के अनुसार एक आदर्श राज्य की जनसंख्या **10000** होनी चाहिए।
- ➢ **अरस्तु** के अनुसार न तो इतनी कम होनी चाहिए कि अच्छे सैनिक ही ना मिलें और न इतनी अधिक होनी चाहिए कि उन पर नियंत्रण ही नहीं किया जा सके।

भू-भाग —

- ➢ यह भी राज्य का **भौतिक अंग** है।
- ➢ **ब्लूँशली (Bluntschli)** पहला विद्वान था जिसने भू-भाग को राज्य का अंग माना।
- ➢ **सीले (Seeley)** और **विलोबी (Willoughby)** ने भू-भाग को राज्य का अंग **नहीं** माना।
- ➢ भू-भाग के बिना कोई भी राज्य नहीं बन सकता। जैसे- 1948 से पहले इज़राइल राज्य नहीं था जबकि यहूदी अपना राज्य इज़राइल की मांग कर रहे थे।

सरकार —

- ➢ सरकार में तीन अंग शामिल होते हैं —

✓ **विधायिका** ✓ **कार्यपालिका** ✓ **न्यायपालिका**

सम्प्रभुता / प्रभुसत्ता (New Topic) —

- ➢ यह राज्य का **नवीनतम और आध्यात्मिक अंग** है।
- ➢ सम्प्रभुता शब्द लैटिन भाषा के **'सुप्रेनस' (Superanus)** शब्द से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है - **"सर्वोच्च शक्ति"**।
- ➢ मध्यकाल में (500-1500 ई.) यूरोपीय राज्यों पर पोप का नियंत्रण था, राज्य व्यक्तिगत निर्णय भी पोप की स्वीकृति के बिना नहीं ले सकता था।
- ➢ फ्रांस के राजा **फिलिप** ने पोपवादी व्यवस्था का विरोध किया और इस विरोध का समर्थन फ्रांसीसी विद्वान **बोदां (Bodin)** ने किया और 1576 में अपनी पुस्तक **"Six Books Concerning on Republic"** में सम्प्रभुता का सिद्धांत दिया।